धनी आए जगावहीं, कहे कहे अनेक सनंध।
नींदें सब भुलाइयां, सेवा या सनमंध।। १८ ।।

धनी आकर हर तरह से वाणी सुनाकर तुम्हें जगा रहे हैं। इस माया ने सेवा और मूल सम्बन्ध सब भुला दिया।

ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर।
वचन पिउ के लेयके, इत क्यों न जागो मांहें अवसर।। १९ ।।

धनी के घर जाने के बाद यह जमीन आग जैसी लगेगी। इसलिए, हे सुन्दरसाथजी! यह सुन्दर अवसर आपके हाथ में है। धनी की वाणी सुनकर जागते क्यों नहीं हो?

भट परो इन नींद को, ए ठौर बुरी विखम।
यों जगावते न जागियां, तो कौन विध होसी तिन।। २० ।।

आग लग जाए ऐसी माया के संसार को, जहां जहर भरी जमीन है। जो यहां जगाने पर भी नहीं जागेगी तो उनका घर चलकर क्या हाल होगा?

तुम देखो भांत धनीय की, कई विध करी चेतन।
सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन।। २१ ।।

हे साथजी! तुम धनी की मेहर को देखो। धनी ने कई तरह से तुम्हें चेतन किया है। यह वचन सबको सुनाकर श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, साथजी! जागो और घर चलो।

साहेब मांहें बैठ के, बतावत हैं ठौर।
सो घर तुमको देखाइया, जहां नहीं कोई और।। २२ ।।

धनी अपने बीच बैठकर घर का ठिकाना बताते हैं। वह घर तुम्हें दिखाया है जहां अपने सिवाय कोई और नहीं है।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ६३७ ।।

अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम।
वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम।। १ ।।

हे मेरी आत्मा! धनी की पहचान करने के बाद अब मत भूलना। धनी ने अपने घर की पहचान करा दी है। अब उनके चरण कमलों को नहीं छोड़ना।

वचन कहे बड़े मुखथें, पर तूं तो समया न भूल।
तूं कात बारीक धनीय का, ए तातें पावेगी मूल।। २ ।।

तुमने अपने मुख से बड़ी-बड़ी बातें की थीं। तू तो अब न भूल और अपने धनी का बारीक सूत कात। इसकी कीमत तुझे मिलेगी।

अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर।
जब उठेगी आतन से, तब बहुरि चाहेगी अवसर।। ३ ।।

अभी तूने पाव भर भी नहीं काता और वहां तो सेर (किलो) भर चाहिए। जब तू आतन (भवसागर) से उठेगी, फिर इस समय को ललचाएगी कि और क्यों नहीं काता?

ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल।
अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल।। ४ ।।

इतने दिन तूने माया में लिप्त होकर गंवा दिए। अब तेरे घर चलने के दिन आ गए हैं।

Nijanand App

जो तूं उठी काते बिना, आए इन अवसर।
कहा करेगी इन नींद को, जो ले चलसी घर।।५ ।।

ऐसा अवसर हाथ आने पर यदि तू काते बिना उठेगी तो इस माया को घर में ले जाकर क्या करेगी?

अजूं न जागे जोर कर, जो ऐसी तुझ पर भई।
धनी आए बेर दूसरी, तेरी सुध ऐसी क्यों गई।।६ ।।

तुझे क्या हो गया है कि धनी आए और चले गए, फिर भी तू हिम्मत करके नहीं जागती। धनी दूसरी बार तन धारण करके आए हैं। तेरी सुध ऐसी क्यों हो गई?

कर सीधा समार तकला, कस कर बांध अदवान।
दे गांठ माल मरोर के, पूनी लगाए के तान।।७ ।।

हे सखी! तू तकला सीधा करके चरखे को संभाल। कसकर डोरी (अदवान) बांध और माल को डोरी में मरोड़कर गांठ लगा कि वह खुले नहीं। पूनी तकले से लगाकर सूत खींचो।

फेर तूं चरखा उतावला, करके अंग कूवत।
तूं लेसी सोहाग धनीय को, तेरे बारीक इन सूत।।८ ।।

तू अपने चरखे को ताकत से तेजी से घुमा। तेरे इस बारीक सूत कातने से धनी का प्यार तुझे मिलेगा।

ऐ रेहेसी अधबीच कातना, दिन आए समें करे भंग।
तुझ देखत सैयां चलियां, जो हुती तेरे संग।।९ ।।

हे सखी! समय पूरा होने पर तेरा कातना अधूरा रह जाएगा। तेरे देखते ही देखते तेरे साथी चले गए।

अब हिंमत करके कात तूं, दिल बांध सूत के साथ।
ए मिहीं सूत सोहाग का, सो होसी तेरे हाथ।।१० ।।

चित्त लगाकर हिम्मत से सूत कातो, निश्चित ही तुमसे बारीक सूत कतेगा और धनी का प्यार मिलेगा।

अब नींद करे जिन तूं, ए नींद देवे दुहाग।
उठ तूं जाग जोर कर, दौड़ ले पिउ सोहाग।।११ ।।

अब नींद करने का समय नहीं है। यह नींद दुःखी करेगी, इसलिए जोर लगाकर जागो और धनी का प्यार लो।

ए सूत है अति सोहना, मोल मोहोंगा होसी एह।
तूं पहचान पिउ अपना, वार फेर जीव देह।।१२ ।।

तेरा यह सूत बहुत अच्छा है। इसकी कीमत अच्छी मिलेगी। इसलिए अपने धनी को पहचान और अपने जीव को उन पर कुर्बान कर दे।

अब ले स्याबासी सैयनमें, कर तूं ऐसी भांत।
एह मिहों सूत सोहाग का, सो रात दिन ले कात।।१३ ।।

हे सखी! अब तू ऐसा करके रात-दिन मेहनत करके बारीक सूत कात। जिससे धनी प्यार देंगे और सखियों से शाबाशी मिलेगी।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ६५० ।।

Nijanand App